देशज अस्मिता और रेणु साहित्य

संपादक

अनन्त

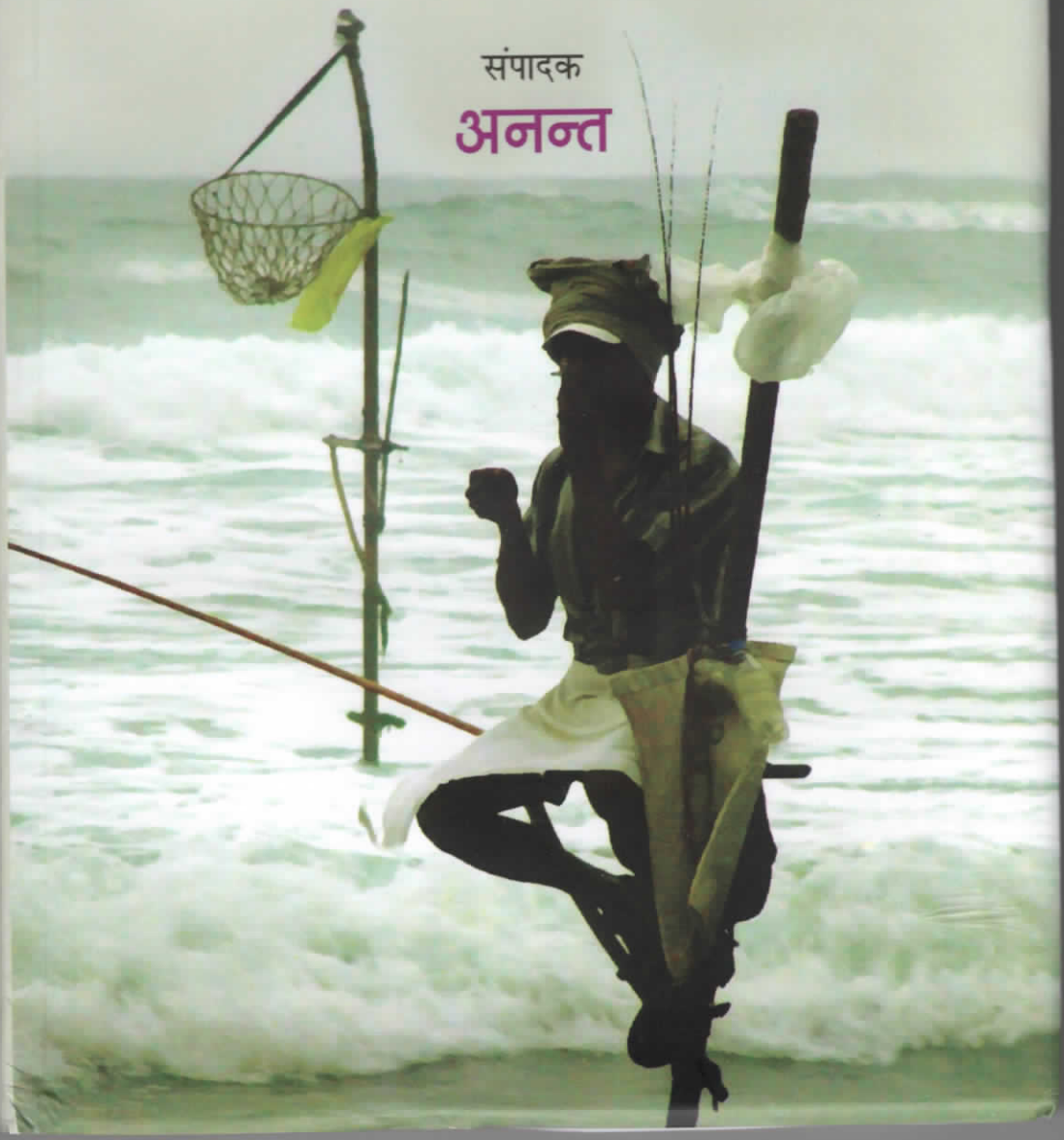

देशज अस्मिता और रेणु साहित्य

संपादक
अनन्त

कीकट प्रकाशन
कुरथौल, पटना-804453

मूल्य : रु. 450
प्रथम संस्करण : 2019
सर्वाधिकार : संपादक / लेखकगण

प्रकाशक - कीकट प्रकाशन
ग्राम+पो. - कुरथौल, पटना (बिहार) - 804453
E-mail : keekatprakashan@gmail.com

साज-सज्जा : बिर बुरु ओम्पाय मीडिया, राँची (झारखंड)
मुद्रक : कंप्यूटेक प्रिंटर्स, E-17, पंचशील गार्डन, नवीन शहादरा
(जैन मंदिर के समीप), दिल्ली - 110032

Deshaj Asmita Aur Renu Sahitya

Edited by Anant

ISBN : 978-81-941660-1-6

विषय सूची

भूमिका : देशज अस्मिता और रेणु साहित्य	- अनंत	07
1. मॉरिशस में रेणु का 'कितने चौराहे'	- अलका धनपत	41
2. नेपाल के लिए रेणु	- श्वेता दीप्ति	44
3. रूस में भी लोकप्रिय हैं रेणु	- डॉ मीनू शर्मा	47
4. मैला आँचल की आंचलिकता	- डॉ॰ जंगबहादुर पांडेय	50
5. जीवन की लय में मानवीयता की तलाश	- डॉ॰ रूपा सिंह	53
6. राष्ट्र निर्माण की चिंता और रेणु	- डॉ॰ सुरेन्द्र नारायण यादव	57
7. मैला आँचल : आंचलिकता बनाम राष्ट्रीयता	- प्रो॰ अजय कुमार साव	63
8. रेणु के कथा साहित्य में लोकजीवन	- किरण बंसल	67
9. पलटू बाबू रोड : नाटकीयता अनलिमिटेड	- मृत्युंजय प्रभाकर	70
10. रेणु की कहानियों में राजनीति का यथार्थ चित्रण	- डॉ॰ विनायक काले	74
11. मैला आँचल की भाषा	- श्रीमती तारामणि पाण्डेय	77
12. रेणु के उपन्यास में बहुभाषिकता	- डा॰ कृष्ण कुमार पासवान, प्रो॰ सच्चिदानन्द चतुर्वेदी	80
13. रेणु की कहानियों में ग्रामीण परिवेश	- डॉ॰ बौबी शर्मा	84
14. रेणु की यथार्थवादी अभिव्यक्ति : अच्छे आदमी	- रंजना कण्ठ	87
15. रेणु के उपन्यासों में ग्रामीण संस्कृति	- डॉ॰ रीभा तिवारी	90
16. वर्तमान राजनीतिक संदर्भ में मैला आँचल की प्रासंगिकता	- प्रभा शर्मा	93
17. भुलाये नहीं भूलती रेणु की 'तीसरी कसम'	- डॉ॰ मोहम्मद माजिद मियां	96
18. लोकसंस्कृति-मूलक समाज और रेणु के उपन्यास	- सरस्वती मिश्र	99
19. रेणु की कहानियों में चित्रित लोकजीवन	- आलोक कुमार पाण्डेय	102
20. मैला आँचल का वस्तुशिल्प	- चन्द्रमणि किशोर	105
21. रेणु अंचल की पहचान बिदापत नाच	- मनोज कुमार	107
22. मैला आँचल में नारी जीवन के विविध आयाम	- मिकी कुमारी	110
23. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रेणु के रिपोर्ताजों की प्रासंगिकता	- मोहसिन खान	113
24. रेणु के उपन्यास और सामाजिक समस्याएँ	- पवन कुमार	116
25. आंचलिकता और रेणु साहित्य संदर्भ : मैला आँचल	- संजु कुमारी	119

26. आंचलिकता और रेणु	- शबनम तब्बसुम	122
27. पंचलाइट कहानी में लोकतत्त्व	- सलीम अहमद	125
28. श्रमिक संवेदना और रेणु की कहानियाँ	- सुधांशु कुमार	128
29. मैला आँचल में अभिव्यक्त वर्ग संघर्ष	- शशिकान्त यादव	131
30. जुलूस के आईने में विस्थापन	- स्कन्द स्वामी नारायण सिंह	134
31. 'आदिम रात्रि की महक' में निहित सामाजिक यथार्थ	- विजय कुमार यादव	137
32. युगचेतना की अभिव्यक्ति हैं रेणु के रिपोर्ताज	- सितारे हिन्द	140
33. रेणु को पढ़ने के चार साल बाद...	- विकास सिंह मौर्य	144
34. मैला आँचल का राजनीतिक परिदृश्य	- क्रांति कुमार	147
35. रेणु की स्त्री-दृष्टि कथा साहित्य के सन्दर्भ में	- ज्योत्स्ना नारायण	150
36 'मारे गए गुलफाम' कहानी में गीतात्मक प्रयोग	- उमाशंकर कुमार	153
37. फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आँचल : एक अध्ययन	- बुलटी दास	156
38. परती परिकथा के नारी पात्र	- उमेश चन्द	158
39. वन तुलसी की गंध	- श्लेषा सचिन्द्र	161
40. कहानी से फिल्म तक : 'तीसरी कसम' के संदर्भ में	- रंजीत कुमार निषाद	164
41. मैला आँचल के नारी पात्र	- प्रतिमा सिंह	167
42. जनपक्षीय पत्रकारिता के युगपुरुष रेणु	- शोभा बिसेन	171
43. रेणु की पर्यावरणीय चेतना 'बट-बाबा'	- पूर्णिमा	174
44. 'नेपाली क्रांति कथा' में अभिव्यक्त युद्ध नीति	- डॉ. स्नेह सुधा	178
45. मैला आँचल में चित्रित नारी जीवन	- डॉ. अनुराधा चौधरी	183
46. रेणु के कथा साहित्य में आंचलिक परिवेश और भाषाई सौंदर्य	- डॉ. विरल पटेल	187
47. मैला आँचल में यौन-विमर्श	- अनुराधा	191
48. 'लाल पान की बेगम' ग्रामीण परिवेश में स्त्री	- डॉ. विन्दा पाण्डेय	194
49. मेरीगंज में संथाल-विद्रोह	- अमिता यादव	198
50. लोक संवेदना को तलाशती : रसप्रिया	- डॉ. संगीता मौर्य	201
लेखक परिचय		205

जनपक्षीय पत्रकारिता के युगपुरुष रेणु

शोभा बिसेन

फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्ताज जनपक्षीय और ग्रामीण पत्रकारिता का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। 4 मार्च 1921 को जन्मे रेणु की पत्रकारिता की शुरुआत 1945 में प्रकाशित विदापत नाच नामक रचना से मानी जाती है। यह सिलसिला उन्होंने 1977 तक जारी रखा। लगभग 32 वर्षों की पत्रकारिता के दरम्यान रेणु ने हाशिए के समाज की पीड़ा, समाज में व्याप्त सामाजिक विद्रूप स्थितियों, सत्ता द्वारा जनता की उपेक्षा और जनता से जुड़े जन-सवालों पर केन्द्रित विषयों पर रिपोर्ताज लेखन किया है। रेणु ने अपनी पत्रकारिता के दरम्यान बाढ़ व अकाल सहित कई अन्य ज्वलंत मुद्दों पर पत्रकारिता के नये मानक गढ़ने वाले रिपोर्ताज लिखे हैं, जिससे नयी पीढ़ी को सीखने को मिलता है।

ग्रामीण संस्कृति का प्रतीक रिपोर्ताज विदापत नाच में रेणु ने अंतिम पायदान पर खड़े समाज के शोषण की व्यथा-कथा चित्रित करते हुए लिखा है-

"थारी बेच पटवारी के देलियेन्ह,
लोटा वेच चौकीदारी।
बकरी बेच सिपाही के देलियेन्ह,
फटक नाथ गिरधारी।" [1]

रेणु विदापत नाच नामक रिपोर्ताज में बिकटा के माध्यम से जमींदारी जुल्म और शोषण से उत्पन्न हुई गरीबी की कारुणिक स्थिति का चित्रण करते हैं। अपनी पत्रकारिता के दरम्यान समाज में घटित हो रही घटनाओं पर मौन नहीं साधते हैं। रेणु की प्रतिक्रियाओं को उनकी रचनाओं में पढ़ा जा सकता है।

रेणु की पत्रकारिता अंचल केन्द्रित घटनाओं तक ही सीमित नहीं रही। पड़ोसी देश नेपाल के जनसवालों को भी उठाया है। इन्होंने अपने रिपोर्ताज 'सरहद के उस पार' में विराटनगर की स्थितियों का वर्णन किया है। रेणु ने लिखा है- "दिन-प्रतिदिन नेपाली प्रजा की जिंदगी बदतर होती जा रही है। इस पर तुर्रा यह कि अभी और भी कितने विषधर अपने-अपने दाँतों को तेज कर रहे हैं, नेपाल की सड़कों पर चक्कर काट रहे हैं। "प्रभो!' मुझे सिर्फ हड्डी पीसने वाली मिल ही खोलने की आज्ञा दी जाये। अमेरिकन मशीन नये ढंग की पिसाई.....! उफ! बहुत जल्द ही पूँजीपतियों के घर में नेपाल राज्य बंधक पड़ जायेगा।"[2] ..... इस रिपोर्ताज के प्रकाशन के बाद ही विराटनगर के मजदूरों का आंदोलन शुरू हुआ। इससे रेणु की लेखनी की ताकत का अंदाजा लगाया जा सकता है।

शायद यही वजह है कि रेणु को क्रांतिवीर कलमकार भी कहा जाता है।

बाढ़ और अकाल पर भी रेणु ने रिपोर्ताज लिखे हैं। 'हड्डियों का पुल' में रेणु ने कोसी क्षेत्र में आए बाढ़ से उत्पन्न अकाल व भुखमरी का वर्णन किया है। समाज में व्याप्त सामाजिक-आर्थिक विषमता का यथार्थ चित्रण रेणु ने किया है। अकाल के समय जमींदारों के यहाँ खीर-पूड़ी, मिठाई-हलवा व मांस आदि व्यंजनों की पार्टी उड़ायी जाती है वहीं मजदूरों के यहाँ दाने-दाने के लाले पड़े हैं। 1966 में रेणु ने 'भूमिदर्शन की भूमिका' नामक रिपोर्ताज लिखा। इस रिपोर्ताज में दक्षिण बिहार में सूखे से आये अकाल का वर्णन है। रेणु का यह रिपोर्ताज छह किश्तों में दिनमान' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। यह एक यात्रा-कथात्मक शैली में लिखा गया रिपोर्ताज है। दक्षिण बिहार के सूखे से उपजी विसंगतियों का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करते हुए रेणु भूखे-नंगे दलित वर्ग के लोगों की पीड़ा से परिचित कराते हैं। रेणु व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं- "कौन कहता है' सूखा पड़ा है? सरकार? सोशलिस्ट (प्रजा-संयुक्त) कम्युनिस्ट? कांग्रेसी? कौन बोलता है? कोई मिनिस्टर? कोई जनता का सेवक? .....ऑल फ्रॉड!"[3]

"पटना-जल-प्रलय' 1975 में पटना में आयी बाढ़ पर लिखा गया रिपोर्ताज है। 'फ्लैशबैक' शैली में लेखन करते हुए इसमें लोककथाओं का भी प्रयोग किया है। रेणु का यह अंतिम रिपोर्ताज है। इसमें शिल्प और संवेदना का उत्कर्ष देखने को मिलता है। रेणु ने इसके पूर्व में भी बाढ़ पर केन्द्रित रिपोर्ताज का लेखन किया है। कोसी की बाढ़ पर केन्द्रित 'जै गंगे', 'डायन कोसी', 'नया कहानी : पुराना पाठ' अत्यंत मार्मिक रिपोर्ताज हैं। इन रिपोर्ताजों में रेणु ने बाढ़ पीड़ितों की पीड़ा और पीड़ा में भी जीवन जीने की जिजीविषा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। 'जै गंगा' में रेणु ने लिखा है-

"टूटे हुए झोपड़ों के छप्परों और पेड़ों पर बैठे हुए अर्धमृतकों की निगाहें ऊपर की ओर उठती हैं। हवाई जहाज ..... हां हवाई जहाज ही है। उनके जीने की इच्छा प्रबल हो उठती है। वे चाहते, चिड़ियों की तरह....हवाई जहाज से उड़कर हरे भरे मैदानों वाली दुनिया में जाना। फड़रर ... गरगरर ...।"[4]

रेणु अपने रिपोर्ताजों में सरकार की जन-विरोधी नीति और नेताओं के निरंकुशता भरे कारनामों का चित्रण कर साहसिक पत्रकारिता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। रेणु निष्पक्षता और पारदर्शिता की मिसाल पेश करते हैं। रेणु की पत्रकारिता और उनकी रिपोर्ताज लेखन शैली पर टिप्पणी करते हुए 'फणीश्वरनाथ रेणु डॉट कॉम' के संपादक 'अनन्त' 'रेणु और रिपोर्ताज' नामक लेख मे लिखते हैं - "रिपोर्ताज लेखक न तो सिर्फ पत्रकार होता है और न सिर्फ साहित्यकार। पत्रकार महज खबर लिख सकता है ! आखिर रिपोर्ताज कौन लिख सकता है? दरअसल रिपोर्ताज लेखक कलाकार होता है। ऐसा कलाकार जो सिर्फ नाट्य मंच पर अभिनय करना ही नहीं जानता, सिर्फ कैनवास पर कूची

के द्वारा चित्र का चित्रण करना ही नहीं जानता, चित्रकारी और अभिनय का गुण भो उसकी कलम में दिखता है। यह तभी संभव है जब लेखक घटना का हिस्सा बने या फिर घटना का विवरण प्रस्तुत करते वक्त वातावरण में वह घुलना-मिलना जानता हो, आम आदमी की भीड़ में शामिल होकर उसकी भाषा बोलना जानता हो। अतः रिपोर्ताज लेखक न तो सिर्फ पत्रकार होता है, न सिर्फ साहित्यकार होता है और न ही कोरी कल्पनाओं में जीने वाला कलाकार होता है। वह कलमकार होता है। जिसे दूसरे शब्दों में कलम का कलाकार भी कह सकते हैं। रेणु सही मायने में हिन्दी जगत के अद्वितीय कलमकार हैं।"[5] रेणु के पास शब्दों की जादूगरी है। देशज, विदेशज शब्दों के साथ लोकोक्तियों एवं मुहावरों से माटी की महक पैदा करते हैं और गीतों के माध्यम से रिपोर्ताज को मर्मभेदी बनाते हैं।

रेणु ने अपनी पत्रकारिता के दौरान जनता की समस्याओं को केन्द्र में रखकर लेखन किया है। उनके रिपोर्ताज का नायक विषयवस्तु, क्षेत्र और आम जनता की समस्या होती है। रेणु ने जनसमस्याओं को दूर करने के नाम पर होने वाली लूट-खसोट का भी खुलासा किया है। बाढ़ और अकाल पर लिखे गये इनके रिपोर्ताज जनपक्षीय पत्रकारिता का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

---

1. समय की शिला पर, फणीश्वरनाथ रेणु, संकलन-संपादन भारत यायावर राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2002, पृ. 18-19
2. वही, पृ.-24
3. वही, पृ.-168
4. फणीश्वरनाथ रेणु डॉट कॉम
5. फणीश्वरनाथ रेणु डॉट कॉम